International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(5): 57-59

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(5): 57-59
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 11-07-2017
Accepted: 12-08-2017

Dr. Tripti Sharma
Assistant Professor
Hindu College, Sonepat,
Haryana, India

Correspondence
Dr. Tripti Sharma
Assistant Professor
Hindu College, Sonepat,
Haryana, India

सुन्दरकाण्डः आध्यात्म एवं विज्ञान का अद्भुत समन्वय

Dr. Tripti Sharma

प्रस्तावना

यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के प्रायः सभी पक्ष पूर्णतः विज्ञान सम्मत हैं। पश्चिम के विद्वानों ने भी हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) का पूर्ण विश्लेषण एवं सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद खुले मन से इस सत्य को स्वीकार किया कि हिन्दुत्व के धर्म और विज्ञान का अद्भुत समन्वय है।[1] इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हिन्दुओं की मान्यताओं, अनुष्ठानों एवं धार्मिक संस्कारों के मूल एवं पृष्ठभूमि में स्थित तथ्यों की व्याख्या से प्राप्त होता है। इसके साथ–साथ ऐसे भी अनेकों प्रमाण उपलब्ध होते हैं जिनसे सिद्ध होता है कि प्राचीन भारतवर्ष का विज्ञान आज के विज्ञान से किसी प्रकार भी पीछे नहीं था।

'सुन्दरकाण्ड' में ऐसे अनेकों प्रसंग हैं, जिनकी व्याख्या करने वाले मनीषियों ने अगणित साक्ष्यों, प्रमाणों एवं युक्ति आदि के आधार पर तत्कानीन समाज द्वारा वैज्ञानिक उपलब्धियों के भरपूर लाभ उठाए जाने का वर्णन किया है। यदि इन वैज्ञानिक सुविधाओं में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के स्वर सुनाई देते हों तो वे जन–जन के लिए हितकारी सिद्ध हो सकती हैं, सांसारिक ही नहीं अपितु पारमार्थिक लाभ की भी प्राप्ति करा सकती हैं– इसी भाव को लक्ष्य बनाकर 'सन्दुरकाण्ड' के कुछ पात्रों ने विज्ञान के सदुपयोग किए जाने का आदर्श प्रस्तुत किया है।

सुन्दरकाण्ड में विज्ञान–सम्मत उपलब्धि का उचित लाभ प्राप्त करने वाले प्रथम प्रमुख पात्र हैं– विभीषण। भगवती सीता जी खोज के प्रसंग में हनुमान् जी जब लंका के विभिन्न प्रमुख भवनो का निरीक्षण करते हैं तो उन्हें एक सुन्दर महल दिखाई देता है। इस भवन की प्रमुख विशेषता यह थी कि इसमें श्री राम जी के आयुध के चिन्ह अंकित थे और वहाँ नवीन (हरे–भरे) तुलसी के पौधे भी विद्यमान थेः–

दो0– ''रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ।।
(सुन्दरकाण्ड, दोहा–6)

यह वैष्णव रत्न विभीषण का भवन था और इस घर में उगे हुए तुलसी के पौधे विभीषण जी को धार्मिक प्रवृत्ति के साथ–साथ इस तथ्य के भी सूचक थे कि विभीषण जी को तुलसी के वैज्ञानिक लाभों का पूर्ण परिचय था।

वास्तविकता यह है कि तुलसी की पूजा एवं प्रतिष्ठा का मुख्य कारण उसकी आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं अन्य वैज्ञानिक महत्त्वों पर निहित है। तुलसी, पीपल एवं वटादि वृक्ष पर्यावरण की विशुद्धि के आधार होने के साथ अनेक रोगों को उपचार (इलाज) करने के लिए औषधियों के रूप में भी प्रयुक्त किए जाते हैं।

विज्ञान ने तुलसी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर Ocimum Sanctum नाम दिया है जो इस तथ्य को उजागर करता है कि न केवल हिन्दुओं (वैष्णव आदि) ने अपितु विज्ञान ने भी तुलसी की पवित्रता एवं उपयोगिता को स्वीकार किया है।[2] तुलसी के स्वास्थ्य प्रदायक गुणों और सात्त्विक प्रभाव के कारण उसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गई कि लोग उसे भक्तिभाव की दृष्टि से देखने लगे एवं उसे पूज्य माना जाने लगा।[3] विभीषण के घर में लगी हुई तुलसी की सात्त्विक सुगन्ध ने ही तो हनुमान जी के हृदय को आकृष्ट किया था। 'चरकसंहिता' में तुलसी के आयुर्वेदिक गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि तुलसी (सुरसा) हिचकी, खाँसी, विषविकार, पसली के दर्द को नष्ट करती है। इसके पित्त की वृद्धि, दूषित कफ तथा (पेट आदि की) वायु का शमन होता है। यह दुर्गन्ध को भी दूर करती है।

"हिक्काज – विष श्वास – पार्श्वशूल विनाशिनः
पित्तकृतत्कफवातध्नसुरसः पूतिगन्धहा।।'' (चरकसंहिता)

'भाव प्रकार' के अुनसार तुलसी कटु एवं तिक्त होने के कारण हृदय के लिए हितकर, त्वचा के रोगों में लाभदायक, पाचन शक्ति को बढाने वाली, मूत्रकृच्छ के कष्ट को मिटाने वाली है। यह कफ और वात (वायु) सम्बन्धी विकारों का भी नाश करती है।

''तुलसी कटुका तिक्ता हृदयोष्णा – दाहिपित्तकृत। दीपना
कष्ट कृच्छ्स्रापार्श्व – रुककफवातजिज।।'' (भावप्रकाश)

सुन्दरकाण्ड में सिंहिका नाम की एक ऐसी राक्षसी का उल्लेख मिलता है जो समुद्र में निवास करती थी और माया करके आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को पकड़ लिया करती थीः–

'निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई।
करि माया नभ के खग गहई।।''

सुन्दरकाण्ड के इस सन्दर्भ की वैज्ञानिक व्याख्या करने वाले कुछ विद्वान् कहते हैं कि इस राक्षसी (सिंहिका) के पास अच्छे 'राडार' यन्त्र थे। वह दूर से आती चीज अथवा व्यक्ति की परछाई उसमें देख लेती थी। जैसे आज के राडार दूर से ही परछाई देखकर सूचना देते हैं कि कैसा और कौन–सा वायुयान आ रहा है। वह सिंहिका भी राडार से परछाई देखकर पहचान जाती थी कि वह शुत्र है या मित्र। यदि वह शुत्र होता था तो मिसाइल का उपयोग करके वह उसे मान देती थी। कुछ विद्वानों की यह मान्यता है कि रावण की सेना के पास ऐसे भी यंत्र थे जो शुत्र के विमान की गति को रोककर उसे पके आम की तरह पृथ्वी पर गिरने को विवश कर दते थे।[4] ये सभी प्रमाण इस तथ्य को प्रकाशित करते हैं कि रामायण कालीन भारत वर्ष वैज्ञानिक उपलब्धियों के उच्चतर शिखर पर आसीन था।

श्री हनुमान् जी सीता जी की खोज करके श्रीराम जी के पास पहुँच तो लंका पर चढ़ाई करके सीता जी को वहाँ से मुक्त करने एवं रावण आदि राक्षसों को दण्डित करने की योजना बनाई गई। परन्तु इस कार्य में एक बहुत बड़ी बाधा थी और वह भी समुद्र को पार करके लंका कैसे पहुँचा जाए? समुद्र के अधिपति देव ने स्वयं ही समुद्र को पार करने का उपाय बतलाते हुए कहा कि वानरों की सेना में नील औ नल दो भाई है जिन्होनें लड़कपन में ऋषि से आशीर्वाद पाया है। उनके स्पर्श से ही भारी–भारी पर्वत (पत्थर) आपके प्रताप से समुद्र पर तैरेगेः–

''नाथ नील कपि द्वौ भाई। लरिकाई रिषि आरिषा पाई।।
तिनके परस किए गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे।।''
(सुन्दरकाण्ड, 60/1–2)

विद्वानों का एक बहुत बड़ा वर्ग यह स्वीकार करता है कि समुद्र पर पत्थरों को तैरा कर पुल बनाने की यह योजना पूर्णतः विज्ञान पर आश्रित थी। नल और नील दोनों (प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए) सिविल इंजीनियर थे, जिन्होनें अपनी विशिष्ट योग्यता से इस सुदृढ़ पुल का निर्माण किया था। ऐतिहासिक तथ्य है कि उन दिनों दक्षिण भारत में पश्चिमी तट पर ज्वालामुखी हुआ करते थे। ज्वालामुख से निकलता हुआ लावा वायु के कणों को अपने में समेट कर एक 'लांवा' नामक पत्थर का निर्माण करता है, जिसे आंग्ल भाषा में 'फ्यूमिस स्टोन' कहते हैं। इस पत्थर की विशेषता यह है कि इसका घनत्व एक से कम होता है और यह बहुत मजबूत भी हुआ करता है, अतः पानी में डाले पर यह तैरता है। ऐसा अनुमान है कि भारत में धनुष्कोटि के निकट ऊँची–ऊँची चट्टाने थीं। उन ऊँची चट्टानों से लोहे के रस्सों को शुरूआती पत्थरों से जोड़ने का प्रयास किया गया होगा ताकि भारतीय सीमा से सटें पत्थर पानी में इधर–उधर बिखर न जाएँ। श्रीराम जी की सेना में सैनिकों की काफी संख्सा थी अतः पत्थरों की निरन्तर आपूर्ति होती रही होगी। निस्सन्देह पत्थरों को एक विशेष आकृति में काटा गया होगा तथा इस बात का बराबर ध्यान रखा गया होगा कि इन (लांवा नामक) पत्थरों से बना हुआ पुल लचीला हो तथा तरंगों के साथ–साथ ऊपर नीचे तैरता रहे तथा विपरीत स्थितियों में भी पत्थर एक दूसरे से अलग न हों। इस योजनापूर्ण पद्धति से बनाए गए पुल द्वारा सागर पार करके भगवान् राम की सेना ने लंका की ओर प्रस्थान किया।[5]

सुन्दरकाण्ड में 'लंका' नगरी का वर्णन करते हुए उसे सोने की चारदिवारी एवं स्वर्ण से

छन्दः– कनट कोट विचित्र मनिकृत संदुरायतना घना।
(सुन्दरकाण्ड 3/छन्द–1)

सुसज्जित बतलाया गया है। लंका नगरी का निर्माण वस्तुतः भगवान् शंकर ने कराया था जो

'अति उतंग जलनिधि चहुँपासा। कनककोट कर परम प्रकासा।''
(सुन्दरकाण्ड, 3/11)

किसी विशेष कारणवश बाद में रावण को प्राप्त हो गई। भगवान् शंकर एक बहुत बड़े वैज्ञानिक थे और उन्होनें अपनी वैज्ञानिक पद्धति से लोहे को सोने में परिवर्तित करके उससे स्वर्णमयी (सोने की) लंका का निर्माण करवाया था। आज का विज्ञान भी यह मानता है कि एक तत्त्व को दूसरे तत्त्व में बदला जा सकता है। इसके लिए प्रोट्रोनों, न्यूट्रोनों एवं इलैक्ट्रोनों की संख्या में कुछ फेर बदल की आवश्यकता होती है। लोहे के साने में परिवर्तित करने के लिए एक निश्चित संख्या में न्यूट्रोन एवं प्रोट्रोन को नाभिक (न्यूक्लियस) में डालना पड़ता है और उसके लिए अत्याधिक मात्रा में ऊर्जा की अपेक्षा रहती है। भगवान् शंकर ने स्वर्ण लंका बनाने के लिए श्रीलंका को ही क्यों चुना? इसके पीछे भी एक बहुत बड़ा कारण है। यह विज्ञान सम्मत तथ्य है कि लंका भूमध्यरेखा के निकट है। भूमध्यरेखा पर सौर ऊर्जा बारह महीने उपलब्ध होती है। इस विशाल ऊर्जा को भगवान शंकर ने लोहे के परमाणुओं को सोने के परमाणुओं में बदलने के लिए प्रयोग किया।[6]

इस स्वर्णमयी लंका को हनुमान जी से जला डाला
उलटि पलटि लंका सब जारी।
कूदि परा पुनि सिंधु मंझारी।।'

हनुमान जी को भी भगवान् शंकर का अवतार (रुद्रावतार) माना गया है। वे केवल वैज्ञानिक ही नहीं अपितु विशुद्ध वैज्ञानिक थे।

''सीताराम – गुण – ग्राम पुण्यारण्य – विहारिणौं। वन्दे विशुद्ध – विज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ।।''
(श्रीराम चरितमानस, बालकाण्ड, मंगलचरण श्लोक–4)

उन्होनें स्वर्णलंका का दहन करने के लिए स्वर्ण नगरी के निर्माण की विपरीत प्रक्रिया (प्रतिक्रिया) को अपनाया होगा। जब विखण्डन क्रिया द्वारा परमाणुओं को तोडा जाता है तो उनमें से ऊर्जा निकलती है, जैसेकि एक परमाणु बम में होती है। हनुमान् जी द्वारा की गई इस विखण्डन क्रिया से जो अत्याधिक ऊर्जा निकली, उससे स्वर्ण नगरी लोहे में परिवर्तित हो गई। परिणाम यह हुआ कि इस विखण्डन प्रक्रिया से आस–पास का वातावरण भी गर्म हो गया[7] और लोग इस जली हुई लंका नगरी के कारण व्याकुल हो गए :

''जरइ नगर भा लोग बिहाला।
झपट लपट बहु कोटि कराला।''

निष्कर्षत

कहा जा सकता है कि सुन्दरकाण्ड में ऐसे अनेक प्रसंग है जो तत्कालीन विज्ञान के चमत्कारों से आज के मानव को भी चकित कर देते हैं। सन्दुरकाण्ड में अध्यात्म एवं विज्ञान का यह अद्भुत समन्वय दोनों के समान महत्त्व पर प्रकाश डालता हुआ सुन्दरकाण्ड के सौन्दर्य को द्विगुणित कर देता है।

संदर्भ

1. Hindu (Vedic). religion is thoroughly scientific, where religion and science meet hand in hand. Superiority of Vedic Religion', by W.D. Brown, 10.
2. सैन्ट्रल–हिन्दू कॉलेज, वाराणसी की पत्रिका में यह लेख प्रकाशित हुआ था कि फ्रांस की एक महिला को अपने बाग में काम करवाने के लिए मजदूर नहीं मिलते थे, कारण यह था कि वहाँ काम करने वाले मजदूरों को मलेरिया ज्वर आने लगता था। संयोग वश वह महिला भावतवर्ष से तुलसी का पौधा ले गई और फ्रांस स्थित अपने बागों में उसने लगवाया तो मलेरिया ज्वर आने का दोष सदा के लिए दूर हो गया।
3. देखें– 'तुलसी के चमत्कारी गुण', ले0 श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ01
4. देखें– 'रोम रोम में राम' ले0 श्री राजेन्द्र अरूण, पृ0 108
5. देखें– 'अतीत के झरोखे से –त्रेता युग के वैज्ञानिक चमत्कार' ले0 श्री गोपाल कृष्ण करलिया, 'दामिनी' स्मारिया (2004), पृ0 9–10
6. देखें– 'अतीत के झरोखे से –त्रेता युग के वैज्ञानिक चमत्कार' ले0 श्री गोपाल कृष्ण करलिया, 'दामिनी' स्मारिया (2004), पृ0 10–11
7. देखें– 'अतीत के झरोखे से –त्रेता युग के वैज्ञानिक चमत्कार' ले0 श्री गोपाल कृष्ण करलिया, 'दामिनी' स्मारिया (2004), पृ0 11